B.M.A College Baheri, Darbhanga

Date - 25/11/20

B.A (Hons) - III

Paper - V

Dept. of Sociology

By Dr. Rajesh Kr
Sociology

विषय! - सन्तानात्मक परिवार

ऐसा परिवार जहाँ बच्चे प्रभुत्वशाली होते हैं, एवं उनकी इच्छाएँ परिवार की नीति को निश्चित करती है। सन्तानात्मक परिवार बच्चों का है। यह आधुनिक परिवार की विशेषता है।

विलियम लॉयड वार्नर ने नातेदारी परिवार के दो प्रकार बताए हैं।

(1) जन्ममूलक परिवार :- ऐसा परिवार जिसमें व्यक्ति का जन्म होता है तथा उसका पालन एवं पोषण होता है। इस परिवार में व्यक्ति के माता-पिता एवं भाई-बहन आते हैं।

(2) प्रजनन परिवार: इसका निर्माण व्यक्ति विवाह के बाद स्वयं करता है। इस परिवार में पति, पत्नी एवं उसके अविवाहित बच्चे आते हैं।

अतः एक ही परिवार जन्ममूलक एवं प्रजननमूलक दोनों हो सकता है। जो परिवार माता-पिता के लिए प्रजनन परिवार है वही परिवार उसके बच्चों के लिए जन्ममूलक परिवार होता है।

एवं प्रजननमूलक परिवार, जन्ममूलक भी हो सकता है अर्थात् जन्ममूलक या प्रजनन मूलक भी हो सकता है।

B.M.A. College, Baheri, Darbhanga

Date:- 25/11/2020

B.A (Hons)-III

Paper-V

Dept. of Sociology

By: Dr. Rajesh Kumar

Sociology

विषय:- परिहार एवं परिहास

जब दो नातेदारों के बीच समाज या संस्कृति पारस्परिक अंतःक्रिया का निषेध करती है, उसे परिहार कहते हैं। परिहार संबंधियों के बीच आमने सामने के संबंध या प्रत्यक्ष संबंध को हतोत्साहित किया जाता है, जैसे:- उत्तर भारत में ससुर तथा पुत्रवधु या जेठ (पति का बड़ा भाई) तथा वधु के बीच परिहार संबंध पाया जाता है

जबकि परिहास, परिहार के ठीक विपरीत होता है। इसमें दो संबंधियों के बीच घनिष्ठता तथा अन्तःक्रिया को प्रोत्साहित किया जाता है। इसके अन्तर्गत एक दूसरे से हँसी-मजाक, अश्लील संवाद, तंग करना आदि शामिल है। इनसे अपेक्षा की जाती है कि वह बात भी एक दूसरे का बुरा न माने।

उत्तर भारत में जीजा-साली तथा देवर-भाभी परिहास संबंधों के सर्वोत्तम उदाहरण हैं। इसके अतिरिक्त मामा-भांजा, दादा-पोती आदि के बीच भी परिहास संबंध पाया जाता है। रेडक्लिफ ब्राउन के अनुसार, "परिहास में मित्रता तथा विरोध का अद्भुत सम्मिश्रण होता है।"

B.A. (Hons) - III
Paper - V
Deptt. of Sociology

Date: - 25/?/2020
By: Dr. Rajesh Kr
Sociology

विषय: संयुक्त परिवार के लाभ और दोष

संयुक्त परिवार के निम्नलिखित लाभ एवं दोष हैं:-

लाभ:-

- इसमें समाजीकरण का कार्य आसान हो जाता है।
- इसमें मार्गदर्शन की नियमितता होती है।
- इसमें सामाजिक तथा आर्थिक सुरक्षा होता है।
- यहाँ धन का उचित उपयोग होता है समानता में।
- सम्पत्ति का विभाजन रुक जाता है।
- यहाँ श्रम विभाजन आसान हो जाता है।
- पूरा परिवार अनुशासन एवं नियंत्रण में होता है।
- इसमे संस्कृति की रक्षा होती है।
- यहाँ मनोरंजन की अलग व्यवस्था नहीं करनी होती है।

दोष:

- यह व्यक्ति की कार्यकुशलता में बाधक होता है।
- यहाँ अकर्मण्य व्यक्तियों की वृद्धि होती है।
- यह व्यक्ति के विशेष विकास में बाधक होता है।
- यह गतिशीलता में भी बाधक होता है।
- यह सामाजिक समस्याओं का पोषक भी है।
- यह कलह का केन्द्र भी बन जाता है।
- यहाँ स्त्रियों की बहुत दुर्दशा होती है।
- यहाँ पर गोपनीय स्थान का अभाव होता है।
- मुखिया की स्वेच्छाचारिता
- अनियंत्रित प्रजनन

B.M.A. College, Baheri, Darbhanga

B.A (Hons) - III
Paper - V
Deptt of Sociology

Date:- 25/11/2020
By: Dr. Rajesh Kr
Sociology

विषय:- भारत में संयुक्त परिवार

प्राचीन काल से भारत में परंपरागत परिवार की संरचना को संयुक्त परिवार के रूप में समझा जाता है। भारत में संयुक्त परिवार को परिभाषित करते हुए कहा जाता है कि यह लोगों का वह समूह है जिसमें तीन या अधिक पीढ़ियाँ एक ही छत के नीचे रहती हैं, एक ही चूल्हे से पका खाना खाती हैं और सामान्य गतिविधियों में भाग लेती हैं। वे लोग नातेदारी व्यवस्था के आधार पर संपत्ति में समान अधिकार रखते हैं। कुछ विद्वानों के अनुसार संयुक्त परिवार में सामान्य निवास और चूल्हे का होना आवश्यक नहीं है। इनके अनुसार किसी भी परिवार के संयुक्त होने में तीन दशाओं का होना आवश्यक है, जो निम्न प्रकार हैं:-

(1) पीढ़ियों की गहराई
(2) अधिकार और दायित्व
(3) संपत्ति

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि संयुक्त परिवार एक वंशक्रम रूप से सम्बन्धित एकाकी परिवारों की बहुलता है जो निवास एवं रसोई बनाने की दृष्टि से इकट्ठे रहते हों तथा जो एक ही व्यक्ति की सत्ता के अन्तर्गत कार्य करते हों

B.M.A. College Baheri, Darbhanga

B.A. (Hons)-III
Paper-V
Deptt of Sociology

Date: 25/11/2020
By: Dr. Rajesh Ku
Sociology

विषय:- संयुक्त परिवार

संयुक्त परिवार की सर्वप्रथम अवधारणा स
हेनरी मेन ने दी। भारतीय कानूनी दृष्टिकोण के
अनुसार," एक संयुक्त परिवार में सभी व्यक्ति
सम्मिलित किए जाते हैं, जो एक सामान्य पूर्वज के
वंशज होते हैं। कम से कम तीन पीढ़ियाँ साथ रहती
हों। इनके अतिरिक्त, इनकी पत्नियाँ तथा अविवा
हित लड़कियाँ भी आती हैं। ऐसे परिवारों की
संपत्ति भी संयुक्त होती हैं। इरावती कर्वे के अनुसार
एक संयुक्त परिवार ऐसे व्यक्तियों का एक समूह
है, जो सामान्यतः एक ही घर में रहते हैं,
जो एक ही रसोई में बना भोजन करते हैं,
जो संपत्ति के सम्मिलित स्वामी होते हैं तथा
जो सामान्य पूजा में भाग लेते हैं और जो
किसी न किसी प्रकार एक दूसरे से
रक्त संबंधी हों। संयुक्त परिवार एक से
अधिक एकाकी परिवारों से मिलकर बनता है।
जे. डी. मेन ने मालाबार के नायरों में प्रचलित
तारवाड़ को संयुक्त परिवार का पुरातन
परिवार माना है।
उदाहरण।
संयुक्त परिवार को दूसरे शब्दों में कह सकते
हैं कि जिसमें तीन या अधिक पीढ़ियाँ एक साथ
एक ही छत के नीचे रहती हों, एक ही चूल्हे से पका खाना
खाती हैं, सामान्य गतिविधियों में भाग लेती हैं। वे सभी नातेदारी
व्यवस्था के आधार पर संपत्ति में समान अधिकार रखते हैं।

B.M.A. College, Baheri, Darbhanga

B.A. (Hons) - III

Paper - V

Deptt. of Sociology

Date - 25/11/2020

By - Dr. Rajesh Kum
Sociology

विषय :- संयुक्त परिवार की विशेषताएं

भौतिक, संरचनात्मक, प्रकार्यात्मक आदि आधार पर संयुक्त परिवार की निम्नलिखित विशेषताएं बताई जा सकती हैं :-

- **सत्तात्मक संरचना** : संयुक्त परिवार मे निर्णय तथा निश्चय करने की शक्ति एक व्यक्ति मे होती है. जिसका आदेश का पालन बिना चुनौती का होता है। यह व्यक्ति परिवार का मुखिया होता है।
- **संयुक्त उत्तरदायित्व** : इस परिवार मे परस्पर एक-दूसरे मे सहयोग और समूहवाद की भावना रहती है।
- **बड़ा आकार** : इसमें तीन या तीन से अधिक पीढ़ियाँ एक साथ रहती है।
- **सामान्य निवास** : कुछ विद्वानों ने संयुक्त परिवार के लिए सहनिवास या सामान्य निवास को आवश्यक माना।
- **सामान्य रसोईघर** : सामान्य रसोईघर के होने पर सभी विद्वानों मे मतैक्य नहीं है।
- **सामान्य संपत्ति** : संयुक्त परिवार की संपत्ति संयुक्त होती है और पारिवारिक मुखिया के नियंत्रण मे होती है। सभी सदस्य अपनी कमाई मुखिया को देते है।
- **सामान्य पूजा पाठ** : कुछ विशेष त्योहारों पर सभी सदस्य मिलकर हिस्सा लेते है और दूर रहने वाले सदस्य भी हिस्सा लेने के लिए आ जाते है।
- **नातेदारी सम्बन्ध** : इसके सदस्य रक्त संबंध या गोद संबंध से संबंधित होते है।
- **तुलनात्मक स्थायित्व** : यह परिवार एकाकी परिवारों की तुलना में ज्यादा स्थायी होती है।